International Journal of Multidisciplinary and Current Educational Research (IJMCER)
ISSN: 2581-7027 ||Volume|| 6 ||Issue|| 2 ||Pages 66-77 ||2024||

बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन'

डॉ. विनीता (**शोध निर्देशिका**) प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ
उम्मेद सिंह (**शोधार्थी**) शिक्षा विभाग मेरठ कॉलिज, मेरठ

सांराश : आज हमारी शिक्षा व्यवस्था में उच्चतम आदर्शों का ह्रास हुआ है तथा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधुनिकीकरण हो चुका है। यह एक सर्वमान्य सत्य है कि शिक्षा प्रणाली की सफलता के लिए शिक्षक की शैक्षिक प्रतिबद्धता एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण आयाम होता है। सभी विवेचनाओं को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक प्रतिबद्धता के अलावा शिक्षक में स्वप्रत्यक्षीकरण का तत्व भी अन्तर्निहित होता है। इस शोध अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि के माध्यम से कानपुर मंडल के विभिन्न स्व–वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के 600 बी.एड. के विद्यार्थियों का चयन किया है। जिसमें पाया कि उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुंद्धि के संदर्भ में 'व्यावसायिक प्रतिबद्धता' के प्रति ज्ञान सम्मिलित रूप से महिला एवं पुरूष वर्ग के के बी.एड. विद्यार्थियों के समूह में तुलनात्मक रूप में लगभग असमान पाया गया है क्योंकि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले वर्ग में नेतृत्वता के साथ भावनात्मक बुद्धिमता में सहानुभूति, सामाजिक कौशल, आत्म–जागरूकता, आत्म– सम्मान, आत्म–नियमन और प्रेरणा का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है जो कार्यस्थल पर व्यवसाय और मानव संसाधन के सन्दर्भ में, भावनात्मक बुद्धिमता कार्यस्थल पर अन्य लोगों की भावनाओं को पहचानने और प्रबंधित करने की क्षमता का विकास अधिक मिलता है तथा निम्न सांवेगिक बुंद्धि वर्ग में व्यक्तिगत गुण कार्यबल और संगठन में कमी मिलती है ।
शब्द कुन्जी –व्यावसायिक प्रतिबद्धता, संवेगात्मक बुद्धि, अध्यापक शिक्षा, एनईपी– 1992, 2020,

प्रस्तावना : शिक्षा मानव समाज में मेरूदण्ड है। यह हर युग में मानव की मलिनता को धोकर उज्ज्वलता प्रदान करती है। शिक्षा इस विज्ञान के युग में मानव जीवन में सुख समृद्धि सम्पत्ति और संतोष लाती है। शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक का मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास संभव हो सकता है। शिक्षा द्वारा बालक की मूल प्रवृत्तियों को मानवीय व्यवहार में परिमार्जित कर उसे अच्छी आदतों तथा जीवनोपयोगी कौशल को सिखा कर उसे सर्वश्रेष्ठ मानव के रूप में स्थापित करती है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य शिक्षकों पर निर्भर करता है, अतः उनका सिद्धहस्त होना आवश्यक है। सभी शिक्षक जन्मजात दक्ष नहीं होते हैं, अतः शिक्षित एवं प्रशिक्षित अध्यापक कक्षा शिक्षण को रोचक एवं प्रभावशाली बनाने में समर्थ होता है। बालकों में व्यक्तित्व का सम्पूर्ण तन्मयता के साथ वहन करने योग्य बनाने के लिए प्रशिक्षित अध्यापक होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः स्पष्ट है कि अध्यापकों के लिए सेवापूर्ण एवं सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा की महती आवश्यकता है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्र एवं स्वस्थ एवं मौलिक चिंतन का आधार निर्मित किया जाता है । शिक्षक का स्थान समाज में हमेशा से ही अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। परन्तु यह भी एक सर्वमान्य सत्य है कि शिक्षक को शिक्षण कार्य द्वारा इतना धन नहीं मिलता जितना जीवन यापन के लिए आवश्यक होता है। वर्तमान समय में शिक्षक वर्ग भी धन उपार्जन को महत्वपूर्ण मान रहा है। इसलिए शिक्षण संस्थान भी अब शिक्षण को व्यवसाय की तरह लेने लगे हैं । आज हमारी शिक्षा व्यवस्था में उच्चतम आदर्शों का ह्रास हुआ है तथा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधुनिकीकरण हो चुका है।यह एक सर्वमान्य सत्य है कि शिक्षा प्रणाली की सफलता के लिए शिक्षक की शैक्षिक प्रतिबद्धता एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण आयाम होता है। सभी विवेचनाओं को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र को समर्पित सभी शिक्षा आयोगों ने अंध्यापक की वास्तविकता को दृष्टिपटल पर रखा है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षण को व्यवसाय के रूप में माना जाना आवश्यक

हो गया है और हमें भी इस सत्य को स्वीकार करते हुए शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करना ही होगा। तथा इस शिक्षा व्यवस्था में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भी बालकों में सर्वागीण विकास जैसे कौशल विकास, सामाजिक मूल्यों की पुर्नस्थापना हेतु बहुत परिवर्तन किया गया है। शिक्षक अपनी कर्तव्य निष्ठा, उत्तरदायित्व एवं व्यवसायिक प्रतिबद्धता द्वारा छात्रों में संवेगात्मक बुद्धि तथा अनुभूति का विकास कर सकते हैं। शिक्षक की व्यवसायिक प्रतिबद्धता पर लगातार प्रश्नचिन्ह लगते चले जा रहे हैं। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में जहां शिक्षक प्रशिक्षुओं को सफल शिक्षक बनने का प्रशिक्षण दिया जाता है तो उन्हें व्यावसायिक प्रतिबद्धता का पाठ पढ़ाना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षक प्रतिबद्धता के उपरोक्त बहुआयामी प्रारूपों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षक की सभी व्यवसायिक प्रतिबद्धताएं शिक्षा व्यवस्था के पुनरुत्थान के लिए आवश्यक हैं तथा यह सब आपस में सहसंबंध बनाते हैं। उसी प्रकार सांवेगिक बुद्धि मानव के सफल जीवन को अत्यधिक प्रभावित करती है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण सांवेगिक बुद्धि मनोवैज्ञानिकों तथा अनुसंधानकर्ताओं के लिए विशिष्ट आकर्षण का केंद्र है। हम कह सकते हैं कि सांवेगिक बुद्धि वह महत्वपूर्ण घटक है जो हमें जीवन के हर क्षेत्र में मानसिक रूप से संबल प्रदान कर सकारात्मक कार्य करने हेतु मदद करती है।

समस्या का प्रादुर्भावः प्रस्तुत शोध अध्ययन शिक्षा व्यवस्था की इन्हीं विसंगतियों के अध्ययन हेतु बी.एड पाठ्यक्रम में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षुओं के शैक्षणिक विकास हेतु उनकी व्यवसायिक प्रतिबद्धता व सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में एक तुलनात्मक अध्ययन के रूप में प्रस्तुत है। शोधार्थी ने शर्मा आर. सी. **(1984)** ने पाया कि शिक्षण योग्यता, बौद्धिक स्तर और भावी शिक्षकों की नैतिकता का सकारात्मक संबंध होता है। तथा डॉ. सतीश प्रकाश और एस. शुक्ला **(2009)** ने ईग्नू शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक योग्यता के बारे में अध्ययन किया। शोधार्थी का ऐसा मानना है और अनेकानेक शोधों एवं अनुसंधानों से यह स्पष्ट हो चुका है कि यदि हम शिक्षक प्रशिक्षुओं को पूर्ण रूप से प्रशिक्षित कर अगर उनमें व्यवसायिक प्रतिबद्धता, सांवेगिक बुद्धि का विकास कर सकेंगे तो निश्चित तौर पर वे अपनी कक्षा में मानसिक रूप से समृद्ध जाकर सर्वश्रेष्ठ नागरिकों के निर्माण की प्रक्रिया को गति प्रदान करेंगे। शिक्षक कक्षा में अपने ज्ञान के द्वारा एक नई चेतना को ही विस्तारित नहीं करते अपितु सफल शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की स्थापना भी करते हैं। शिक्षक को सबसे प्रबुद्ध नागरिक माना जाता है। शिक्षक ही समाज में सामाजिक चेतना का प्रचार प्रसार कर सकता है। आज हमारे देश का युवा शिक्षक बनने के लिए पूरे उत्साह से अपने व्यावसायिक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश लेता है। शोधार्थी का स्वयं का मानना है कि शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों में और अधिक शोध अध्ययन की आवश्यकता है जिससे शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में चल रहे बी.एड.पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक संचालित कर देश को भावी शिक्षकों की सर्वश्रेष्ठ पीढ़ी प्रदान कर सकेंगे।

समस्या का कथन

बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन का महत्व : नयी शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों के अनुसार सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को परिमार्जित किया जाना है। नयी शिक्षा नीति बी.एड. पाठ्यक्रम में भी आमूलचूल परिवर्तनों को लागू करने के लिए कटिबद्ध है। अतः बी.एड. कार्यक्रम में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षुओं के शैक्षणिक योग्यता के विकास के साथ साथ उनमें व्यवसायिक प्रतिबद्धता, शिक्षण अभिक्षमता तथा भाषा दक्षता का विकास सांवेगिक बुद्धि के अनुकूल किया जा सके और शिक्षकों के प्रति देश, राष्ट्र विकास भावना की सोच को लेकर परिवर्तन लाने का प्रयास किया जा सकेगा।

शोध के उद्देश्य :

- लिंग भेद के आधार पर बी.एडण के विद्यार्थियों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :

1. उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि वाली महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च सांवेगिक बुद्धि वाली महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाऐं :

1. शोधार्थी द्वारा शोध हेतु जनपद कानपुर मंडल के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के समन्वित रूप से विभिन्न शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत पुरुष तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है।
2. शोधार्थी द्वारा शोध के चरों के आधार पर शिक्षक प्रशिक्षुओं के समुचित अध्ययन की सुविधा समय सीमा के भीतर करने की कोशिश हेतु 600 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन परस्पर सहमति से किया गया।
3. शोधार्थी द्वारा शोध हेतु शिक्षक प्रशिक्षुओं के समुचित अध्ययन के लिए समेकित रूप से बी.एड के गैर सरकारी (स्ववित्त पोषित) महाविद्यालय तक ही सीमित किया गया ।

प्रयुक्त शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है । प्रस्तुत शोध अध्ययन में यादृच्छिक विधि एवं सप्रयोजन विधि का चयन करते हुए न्यादर्श हेतु जनपद कानपुर मंडल के विभिन्न स्व–वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को चुना गया है। जिसके अन्तर्गत न्यादर्शीकरण अधोलिखित सारणी में किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का न्यादर्श– प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या का शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि के माध्यम से कानपुर मंडल के विभिन्न स्व–वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के 600 बी.एड. के विद्यार्थियों का चयन किया है। न्यादर्श प्रदर्शित करती सारणी का प्रारूप निम्न है।

सारणी –1.10

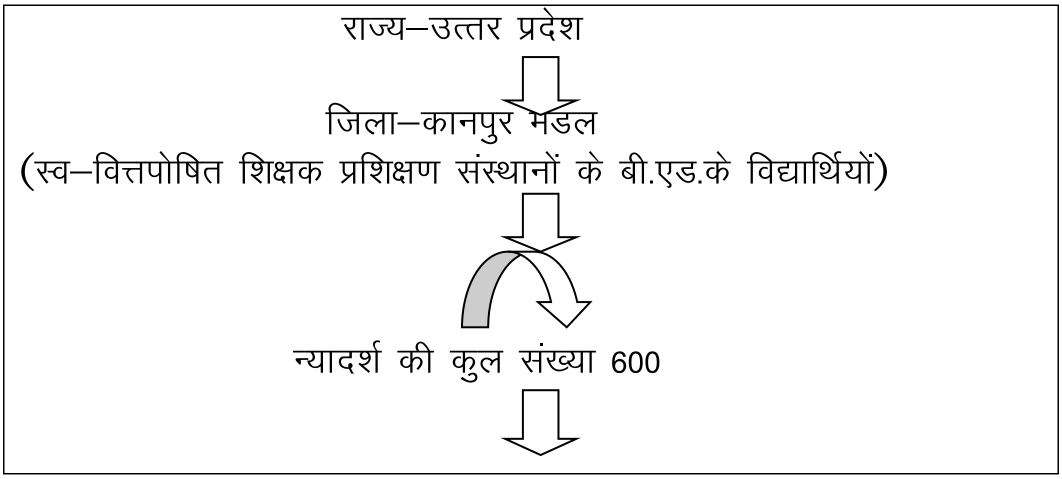

(शहरी व ग्रामीण समेकित से)		(शहरी व ग्रामीण समेकित से)	
उच्च सांवेगिक वाले बी.एड.केविद्यार्थी 300		निम्न सांवेगिक वाले बी.एड. के विद्यार्थी 300	
पुरूष		महिला	
150 विद्यार्थी	150 विद्यार्थी	150 विद्यार्थी	150 विद्यार्थी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रशासित शोध उपकरण :

- ❖ शोधकर्ता ने प्रदत्त संकलन हेतु ''शोधार्थी द्वारा संवेगात्मक बुद्धि के अध्ययन हेतु डॉ अरुण कुमार एवं श्रुति नारायण के द्वारा रचित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण (ई.आई.एस) चुना गया।
- ❖ व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मापन हेतु शोधार्थी द्वारा प्रो. जे. एस. भारद्वाज एवं डॉ अंशु शर्मा द्वारा रचित की मानकीकृत शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता मापनी परीक्षण (टी. पी. आर. एस.) का चयन किया गया।

सांख्यिकी– मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी– परीक्षण – प्रस्तुत शोध अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि के अध्ययन के लिए संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण व मानकीकृत व्यवसायिक प्रतिबद्धता मापनी परीक्षण, प्रश्नावली के विभिन्न आयामों के परीक्षण के सन्दर्भ में अलग–अलग आरेख आयत चित्रों में विश्लेषण को प्रदर्शित हेतु पुरूष एवं महिला बी.एड.के विद्यार्थियोंको जो विभिन्न परिकल्पनानुसार उनके सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त मध्यमान एवं प्रमाप विचलन को आयत चित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

परिकल्पना– उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि वाली महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या– 1.1

सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सांख्यिकीय दर्शाती सारणी–

समूह	**संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**मानक त्रुटि**	**टी–मूल्य**	**सार्थकता का अन्तर**	**निष्कर्ष**
उच्च सांवेगिक बुद्धि(महिला एवं पुरूष विद्यार्थी)	300	430.31	14.22	.825	26.225	सार्थक	अस्वीकृत
निम्न सांवेगिक बुद्धि(महिला एवं पुरूष विद्यार्थी)	300	376.12	32.90	1.909			

df-298पर 0.05 के सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.97 है।

उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सांख्यिकीय दर्शाती आरेख–1.1

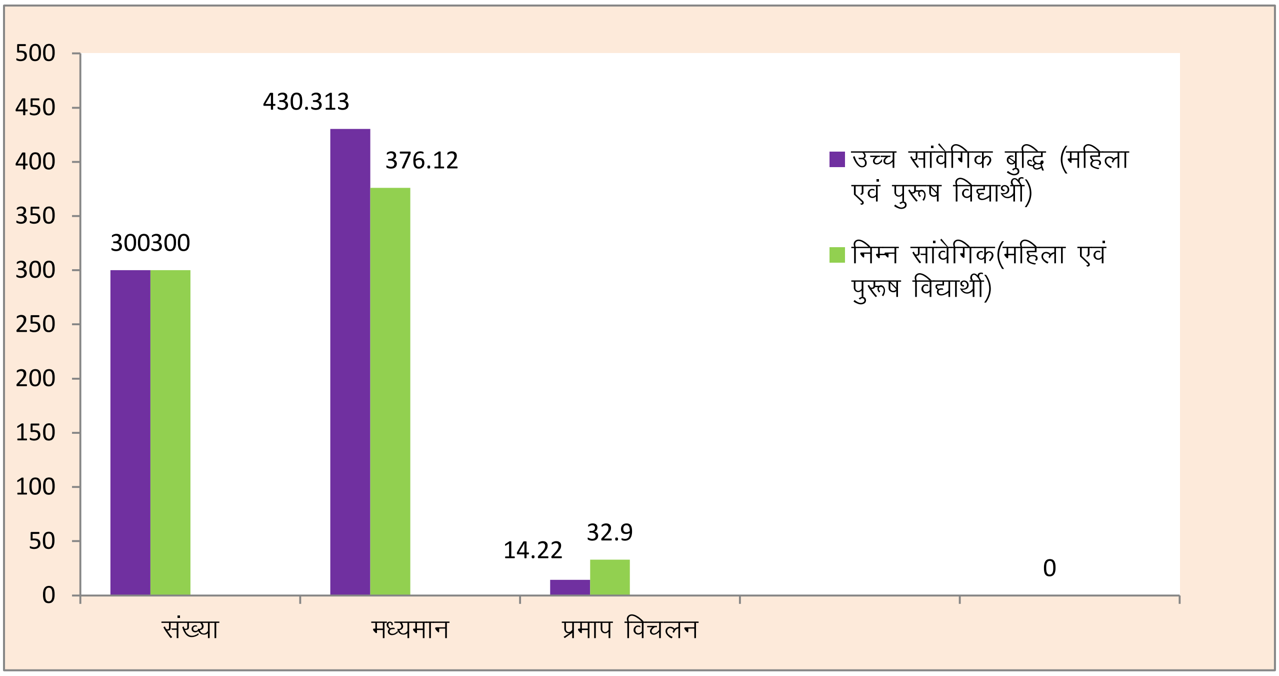

विश्लेषण एवं व्याख्या –प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.1 में उच्च सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड के विद्यार्थियों में पेशेवर सम्बन्धी 'व्यावसायिक प्रतिबद्धता' पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान 430.313, मानक विचलन 14.22 तथा मानक त्रुटि .825 पायी गयी है। निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान 376.12, मानक विचलन 32.90 तथा मानक त्रुटि 1.909 पायी गयी है। दोनों वर्ग के शिक्षकों के समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 26.25 पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंश 298 के 0. 05 स्तर पर टी के अपेक्षित मूल्य 1.97 से काफी अधिक है जो अन्तर की सार्थकता की पुष्टि करता है। अतः निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में 'व्यावसायिक प्रतिबद्धता' के प्रति ज्ञान सम्मिलित रूप से महिला एवं पुरूष वर्ग के के बी.एड. विद्यार्थियों के समूह में तुलनात्मक रूप में लगभग असमान पाया गया है क्योंकि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले वर्ग में नेतृत्वता के साथ भावनात्मक बुद्धिमता में सहानुभूति, सामाजिक कौशल, आत्म–जागरूकता, आत्म–सम्मान, आत्म–नियमन और प्रेरणा का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है जो कार्यस्थल पर व्यवसाय और मानव संसाधन के सन्दर्भ में, भावनात्मक बुद्धिमता कार्यस्थल पर अन्य लोगों की भावनाओं को पहचानने और प्रबंधित करने की क्षमता का विकास अधिक मिलता है तथा निम्न सांवेगिक बुद्धि वर्ग में व्यक्तिगत गुण कार्यबल और संगठन में कमी मिलती है अतः दोनों वर्गों (विज्ञान व कला)के अध्यापन पाठ्यक्रम में सर्वांगीण विकास हेतु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण रूपी ज्ञान में भिन्नता का समावेश के होने के कारण 'व्यावसायिक प्रतिबद्धता' के प्रति दोनों संकाय के शिक्षकों में असमान ज्ञान का स्तर पाया गयी है।

परिकल्पना–उच्च सांवेगिक बुद्धि वाली महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या– 1.2.

उच्च सांवेगिक बुद्धि वाली महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सांख्यिकीय दर्शाती सारणी–

उच्च सांवेगिकसमूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य	सार्थकता का अन्तर	निष्कर्ष
महिला विद्यार्थी	150	439.57	31.25	2.548	2.213	सार्थक	अस्वीकृत
पुरूष विद्यार्थी	150	447.85	27.72	2.264			

df-298पर 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.97

आरेख संख्या– 1.2.
उच्च सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सांख्यिकीय दर्शाती आरेख–

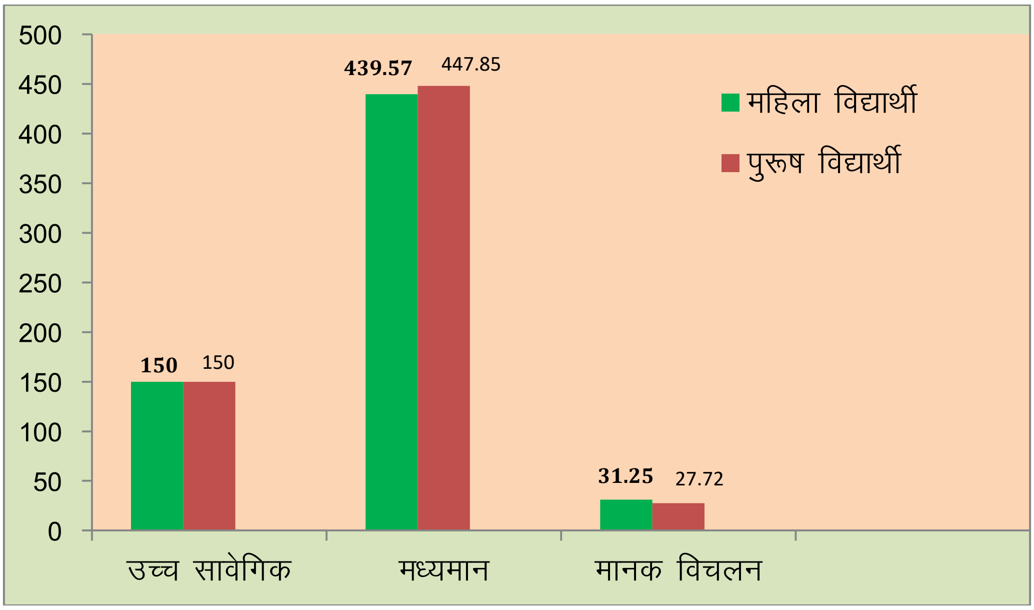

उच्च सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सांख्यिकीय

विश्लेषण एवं व्याख्या –प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.2 में उच्च सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के महिला एवं पुरूष विद्यार्थियों की'व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों महिला समूह का मध्यमान 439.57 मानक विचलन 31.25 तथा मानक त्रुटि 2.548 पायी गयी है। उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के पुरूष विद्यार्थियों समूह का मध्यमान 447.85, मानक विचलन 27.72 तथा मानक त्रुटि 2.264 पायी गयी है। दोनों समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 3.99 पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंश 298 के 0.05 स्तर पर टी के सारणी मूल्य 1.97 से अधिक है जो अन्तर की सार्थकता प्रमाणित करता है। अतः उपयुक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

आकड़ों के विश्लेषण के पश्चात कहा जा सकता है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति ज्ञान की जागरूकता दोनों महिलाएवं पुरुष समूह में समान नहीं है क्योंकि छात्राओं में रोजगार के प्रति बढ़ती रूचि, महिला सशक्तीकरण को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए सरकार की नीतियों का योगदान, महिलाओं के लिए आयोजित विशेष प्रशिक्षण व कौशल विकास तथा महिलाओं को आर्थिक क्षेत्र में मजबूत करने के लिए अनुग्रहित भूमि के लिए स्टाम्प सरचार्ज पूर्ण छूट व बैंकों की स्थापना व रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी आदि ऐसे परिक्षेत्र हैं जहाँ उनके आर्थिक क्षेत्र को मजबूत किया गया तथा वर्तमान समय में पुरूष वर्ग के साथ दूरदृष्टि सोच के साथ–साथ समान कदम मिलाकर चलने के कारण एवं उनके अध्ययन शिक्षण विषयों में समावेश आर्थिक विश्लेषण पाठ्यक्रम व नवीनतम ज्ञान प्राप्ति के संचार के साधनों का असमान उपयोग करने के कारण व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति दोनों लिंगभेद समूह में समान ज्ञान का स्तर नहीं पाया गया है।

परिकल्पना–निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या– 1.3.

निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले महिला एवं पुरूष के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सांख्यिकीय सारणी–

निम्न सांवेगिक बुद्धि	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य	सार्थकता का अन्तर	निष्कर्ष
महिला विद्यार्थी	150	374.64	39.18	3.200	5.241	सार्थक	अस्वीकृत
पुरूष विद्यार्थी	150	342.97	59.78	4.877			

df-298पर 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.97

आरेख संख्या– 1.3.

निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले महिला एवं पुरूष विद्यार्थी के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सांख्यिकीय सारणी–आरेख

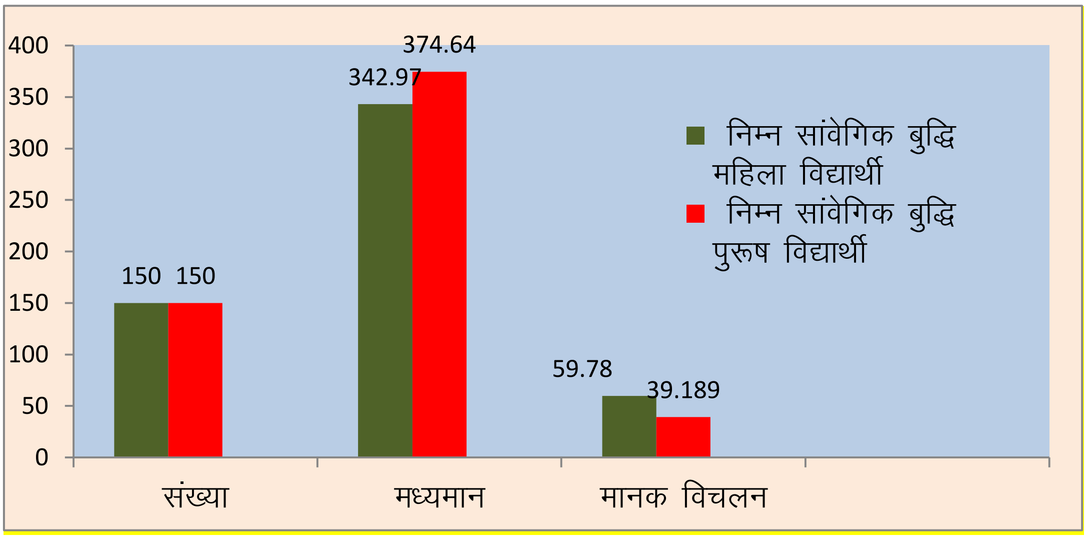

विश्लेषण एवं व्याख्या –प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.3 निम्न सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों के सम्बधी'व्यावसायिक प्रतिबद्धता' पर प्राप्तांकों का अवलोकनकरने पर यह स्पष्ट होता है कि निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के महिला विद्यार्थियों समूह का मध्यमान 342. 97, मानक विचलन 59.78 तथा मानक त्रुटि 4.877 पायी गयी। निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के पुरूष विद्यार्थियों समूह का मध्यमान 374.64, मानक विचलन 39.186 तथा मानक त्रुटि 3.200 पायी गयी है। दोनों समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 5.24 पाया गया जो स्वतंत्रता के अंश 298 के 0.05 स्तर पर टी के सारणी मूल्य 1.97 से काफी अधिक है जो अन्तर की सार्थकता प्रमाणित करता है। अतः सन्दर्भित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'व्यावसायिक प्रतिबद्धता'के प्रति ज्ञान की जागरूकता निम्न सांवेगिक वर्ग में बी.एड.छात्र एवं छात्राओं के समूह में समान नहीं है क्योंकि उनमें मनोवैज्ञानिक विशेषताओं में भी विभिन्नताऐं पायी जाती हैं जो निम्न सांवेगिक वर्ग में व्यक्तियों की विशेषताओं तथा व्यवहार के स्वरूपों में पाये जाने वाला वैशिष्ट्य तथा विचलनशीलता कम पायी जाती है। उनमें व्यवसाय के प्रति आचरण, स्थितिवाद, सद्व्यवहार, संस्कृति व धार्मिक शिक्षा सम्बन्धी अधिकार के प्रति छात्राओं में छात्रों की तुलना में अधिक अभिवृत्ति व रूचि अकादमिक रूप में पायी गयी है तथा शोषण के विरूद्ध एवं संवैधानिक उपचार के प्रति अधिक जागरूकता व सरकार द्वारा महिलाओं के पक्ष में नीतियों का विस्तारीकरण करने का ज्ञान, महिलाओं की हक व सुरक्षा से सम्बन्धित ज्ञान एवं सामाजिक स्तर को मजबूत करने के सन्दर्भ में महिला अधिकारों के संरक्षण के लिए कानून के प्रति जागरूकता का ज्ञान दोनों समूह में समान दृष्टिगत नहीं है एवं उनके अध्ययन शिक्षण विषयों में समावेश सामाजिक विश्लेषण अवधारणा का पाठ्यक्रम व नवीनतम ज्ञान प्राप्ति के संचार के साधनों का असमान उपयोग करने के कारण निम्न सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति दोनों बी.एड.छात्र एवं छात्रा समूह में असमान ज्ञान का स्तर पाया गया है।

परिणाम व निष्कर्ष :

परिकल्पना– उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि वाली महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। उच्च सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड के विद्यार्थियों में पेशेवर सम्बन्धी 'व्यावसायिक प्रतिबद्धता' पर प्राप्तांकों का अवलोकन जो अन्तर की सार्थकता की पुष्टि करता है। अतः निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में 'व्यावसायिक प्रतिबद्धता' के प्रति ज्ञान सम्मिलित रूप से महिला एवं पुरूष वर्ग के के बी.एड. विद्यार्थियों के समूह में तुलनात्मक रूप में लगभग असमान पाया गया है क्योंकि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले वर्ग में नेतृत्वता के साथ भावनात्मक बुद्धिमता में सहानुभूति, सामाजिक कौशल, आत्म–जागरूकता, आत्म– सम्मान, आत्म–नियमन और प्रेरणा का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है ।

परिकल्पना–उच्च सांवेगिक बुद्धि वाली महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। सांख्यिकीय विश्लेषण से ज्ञात होता है कि निर्धारित परिकल्पना के परिणाम जो अन्तर की सार्थकता प्रमाणित करता है। अतः उपयुक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः आकड़ों के विश्लेषण के पश्चात कहा जा सकता है कि उच्च lkaosfxd cqf) ds LaknHkZ esa व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति ज्ञान की जागरूकता दोनों महिला एवं पुरूष समूह में समान नहीं है क्योंकि छात्राओं में रोजगार के प्रति बढ़ती रूचि, महिला सशक्तीकरण को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए सरकार की नीतियों का योगदान, महिला विशेष बैंकों एवं विद्यालय व महाविद्यालयों की स्थापना व रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी आदि ऐसे परिक्षेत्र हैं जहाँ उनके आर्थिक क्षेत्र को मजबूत किया गया व नवीनतम ज्ञान प्राप्ति के संचार के साधनों का असमान उपयोग करने के कारण व्यावसायिक प्रतिबद्धताके प्रति दोनों लिंगभेद समूह में समान ज्ञान का स्तर नहीं पाया गया है।

परिकल्पना–निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले महिला एवं पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस निर्धारित परिकल्पना सार्थकता प्रमाणित करती है। अतः सन्दर्भित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'व्यावसायिक प्रतिबद्धता' के प्रति ज्ञान की जागरूकता निम्न सांवेगिक वर्ग में बी.एड. छात्र एवं छात्राओं के समूह में समान नहीं है क्योंकि उनमें मनोवैज्ञानिक विशेषताओं में भी विभिन्नताऐं पायी जाती हैं जो निम्न सांवेगिक वर्ग में व्यक्तियों की विशेषताओं तथा व्यवहार के स्वरूपों में पाये जाने वाला वैशिष्ट्य तथा विचलनशीलता कम पायी जाती है। उनमें व्यवसाय के प्रति आचरण, स्थितिवाद, सद्व्यवहार, संस्कृति व धार्मिक शिक्षा सम्बन्धी अधिकार के प्रति छात्राओं में छात्रों की तुलना में अधिक अभिवृत्ति व रूचि अकादमिक रूप में पायी गयी है एवं उनके अध्ययन शिक्षण विषयों में समावेश सामाजिक विश्लेषण अवधारणा का पाठ्यक्रम व नवीनतम ज्ञान प्राप्ति के संचार के साधनों का असमान उपयोग करने के कारण निम्न सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति दोनों बी.एड.छात्र एवं छात्रा समूह में असमान ज्ञान का स्तर पाया गया है।

प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ वैश्विक युग में शिक्षा की प्रभावशीलता समाज और राष्ट्र में उसकी उपयोगिता उसके संवैधानिक व शैक्षिक सिद्धान्तों में सन्निहित है। शिक्षा मानव समाज में मेरूदण्ड है। यह हर युग में मानव की मलिनता को धोकर उज्ज्वलता प्रदान करती है। यह निर्विवाद एवं विवेकपूर्ण तथ्य है कि शिक्षा में शिक्षा का मूल अधिकार सर्वजन हिताय है। अधुनातन तथ्यों एवं अनुसंधानों के आधार पर इसका विश्लेषण किया जाये ताकि वैश्वीकरण के युग में शिक्षा द्वारा वर्तमान चुनौतियों को लेते हुए शिक्षा एक नवीन संदर्भ में उभर कर सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व सांस्कृतिक क्रांति लाने में सक्षम हो सके। अस्तु **'अध्यापक शिक्षा'** मानवीय व्यवहार संबंध की व्यवस्था है। इसे प्रभावशाली ढ़ंग से लागू कर उसके परिणामों को प्राप्त करने में सक्षम हो सके। शोधकर्ता द्वारा किये गये गहन अध्ययन और शोध निष्कर्ष के अनुसार, वर्तमान अध्ययन शिक्षक और प्रशिक्षक, शैक्षिक योजनाकार और प्रशासन, नीति निर्माताओं और शिक्षकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उपयोगी रहेगा प्रस्तुत शोध अध्ययन से अध्यापन क्षमता, व्यावसायिक प्रतिबद्धता और संवेगात्मक रूप से भावात्मक परिपक्वता के संदर्भ में प्रशिणार्थियों की कियात्मकता, भावात्मकता, और मानसिक व्यवहार को मूल्यांकन रूप में मदद मिलेगी ।

प्रस्तुत अध्ययन से प्रशिणार्थियों की अध्यापन क्षमता, व्यावसायिक प्रतिबद्वता और भावात्मकता, संवेगात्मक स्तर पर जातीयता, शैक्षणिक योग्यता की असर जानने में सहायता मिलेगी ।
प्रत्येक शोधकर्ता द्वारा किये गये शोध कार्य को तब तक उपयोगी व सार्थक नहीं माना जा सकता जब तक कि यह शिक्षा के क्षेत्र में समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में उपयोगिता प्रस्तुत नहीं करता हो, प्रस्तुत अध्ययन में जो निष्कर्ष उभकर सामने आये उनकी शैक्षिक उपयोगिता को निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट किया जा सकता हैं।

- ❖ विद्यार्थियों की दृष्टि से ।
- ❖ शिक्षकों की दृष्टि से ।
- ❖ अभिभावक की दृष्टि से ।
- ❖ विद्यालय प्रशासन की दृष्टि से ।
- ❖ समाज की दृष्टि से ।
- ❖ सरकार की दृष्टि से–
- ❖ अनुसंधान की दृष्टि से –

- ❖ उत्तम नागरिक बनाने में उपयोगी–
- ❖ शैक्षिक नीति निर्माताओं की दृष्टि से ।

भावी शोध हेतु सुझाव – प्रत्येक समाज में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक गतिविधियां होती हैं जो समाज के सभी सदस्यों के बीच मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक विकास के नए पहलुओं को प्रकट करने के लिए शैक्षिक शोध की ओर ले जाती हैं ताकि समाज को ज्ञान के प्रकाश के साथ जागृत किया जा सके। शैक्षिक शोध हमारी सर्वोत्तम संभव कल्पना से परे दुनिया का पता लगाते हैं और समाज की विशिष्ट निपुणता के लिए शिक्षा प्रणाली के कामकाज को शामिल करते हैं। शैक्षिक निहितार्थ समाज में विभिन्न व्यक्तियों के बीच अंतःसम्बंध के साथ–साथ समाज के अभिजात वर्ग के लिए अलग–अलग पदों का पता लगाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान मूल रूप से शोधकर्ताओं द्वारा ज्ञान के अस्तित्व के विभिन्न मापदंडों को प्रदान करने के लिए अपनाई गई एक पद्धति है। शैक्षिक अनुसंधान में शिक्षाशास्त्र, शिक्षक और शिक्षण शामिल हैं। शैक्षिक रणनीतिक शिक्षण की तकनीक, सीखने के परिणामों के साथ–साथ शिक्षकों और छात्रों के व्यक्तित्व विकास और शिक्षण के दौरान कई मुद्दों को हल करने के लिए शिक्षकों के मार्ग को प्रबुद्ध करते हैं। इस नींव को बनाने में शिक्षक–शिक्षा तथा विद्यार्थी महत्वपूर्ण आयाम हैं।

अतः स्वस्थ्य समाज एवं स्वावलम्बी राष्ट्र का निर्माण एवं कुशल शिक्षक निर्माण के लिए और विद्यार्थियों में विभिन्न पक्षों पर व्यवहार सीखना होगा।

➢ **भावी शोध हेतु अन्य सुझाव –** प्रस्तुत अध्ययन निर्धारित समय में सीमित न्यादर्श के रुप में बी. एड विद्यार्थियों पर किया गया है अतः यह अध्ययन और अधिक विशाल न्यादर्शों के समूह पर भी किया जा सकता है।

1. यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के जिला कानपुर में स्थित बी.एड महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर किया गया है तथा यह प्राइमरी स्कूलों एवं माध्यमिक स्कूलों तथा यह विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों व शिक्षकों पर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन केवल एक समूह बी.एड. के विद्यार्थियों पर किया गया है। इसमें कुल न्यादर्शों 600 विद्यार्थियों पर किया गया है। यह अध्ययन और अधिक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों पर किया जा सकता है।
3. बी.एड. कोर्स में अध्ययनरत कानपुर मंडल के समस्त बी.एड. के विद्यार्थियों को समेकित रूप से जनसंख्या के रूप में अध्ययनार्थ लिया गया है। यह अध्ययन अन्य मंडल के समस्त विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में अध्ययनार्थ लिया जा सकता है।
4. केवल स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों में बी.एड. कोर्स में अध्ययनरत विद्यार्थियों जो महविद्यालयों स्तर पर किया गया है। यह अध्ययन सरकारी बी.एड. कोर्स में में अध्ययनरत महविद्यालयों के विद्यार्थियों व शिक्षकों पर पृथक–पृथक भी किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत अध्ययन में केवल व्यवसायिक प्रतिबद्धता, शिक्षण अभिक्षमता तथा भाषा दक्षता के प्रति संबंध का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यह शिक्षा व शिक्षण के अन्य तथ्यों जैसे– शिक्षण विधियों के नवाचारों अन्य व्यवहारात्मक पक्षों को लेकर शैक्षिक अधिकार, सामाजिक अधिकार, सांस्कृतिक अधिकार, जैसे मनुष्य के विकासात्मक मूल्यों पर भी किया जा सकता है तथा यह समाज के अन्य मानव मूल्यों पर भी तुलनात्मक अध्ययन के रूप में भी किया जा सकता है।
6. प्रस्तुत अध्ययन में केवल व्यवसायिक प्रतिबद्धता, शिक्षण अभिक्षमता तथा भाषा दक्षता के प्रति संबंध का तुलनात्मक अध्ययन विषय वर्ग एवं संवेगात्मक के रूप में तुलनात्मक रूप से किया गया है। तथा यह अन्य संकाय वर्ग जैसे– प्रबन्धन, कम्प्यूटर, चिकित्सीय आदि में भी ऐसे तथ्यों को लेकर तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं।
7. इस प्रस्तुत इस अध्ययन में बी.एड विद्यार्थियों में व्यवसाय प्रतिबद्धता के प्रति तथा उनकी सावेगिक प्राप्त समझ के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है तथा यह अध्ययन बी.एड शिक्षकों तथा समाज तथा परिवार के मुखिया व अन्य सदस्यों में इन घटकों के प्रति उनके विचारों एवं समझ के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन के रूप में भी किया जा सकता है।

8. यह अध्ययन बी.एड महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर किया गया है तथा यह अध्ययन प्राईमरी स्तर, उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं व शिक्षकों पर भी किया जा सकता है।
9. यह अध्ययन केवल एक जिले के एक मंडल के ही बी.एड महाविद्यालयों स्तर पर किया गया है। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण जिलों के बी.एड महाविद्यालयों एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों स्तर के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों पर भी किया जा सकता है।
10. यह अध्ययन भारत के एक ही राज्य के ही बी.एड महाविद्यालयों स्तर विद्यार्थियों पर किया गया है। यह अध्ययन अन्य राज्यों के उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं बी.एड महाविद्यालयों स्तर के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
11. यह अध्ययन सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश एवं अन्य राज्यों से भौगोलिक संदर्भ में भी किया जा सकता है ।
12. यह अध्ययन केवल स्व वित पोषित बी.एड महाविद्यालयों स्तर के विद्यार्थियों पर किया गया है तथा यह अध्ययन सरकारी बी.एड महाविद्यालयों स्तर के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों पर भी किया जा सकता है।
13. यह अध्ययन बी.एड महाविद्यालयों स्तर के विद्यार्थियों पर किया गया है तथा यह माध्यमिक स्तर पर किया जा सकता है। यह अध्ययन समाज व पारिवारिक आधार पर अन्य धर्मो में भी उनके विचारों को जानने के लिए भी किया जा सकता है।
14. यह अध्ययन जिला कानपुर मंडल के बी.एड स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राएं पर किया गया है तथा इस संदर्भ में यह शोध इस जिले में स्थित विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राएं एवं अध्यापनरत् शिक्षकों पर भी किया जा सकता है।
15. यह अध्ययन केवल भारत के एक राज्य उत्तर प्रदेश के एक जिले में बी.एड स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं पर किया गया है जबकि यह अध्ययन विदेशों में अध्ययनरत इसी स्तर के अध्ययनरत छात्रों तथा छात्राएं एवं अध्यापनरत शिक्षकों पर भी कर सकते हैं।
16. यह अध्ययन केवल बी.एड स्तर के विद्यार्थी पर जो कि समेकित रूप से कला व विज्ञान सकायों के विद्यार्थियों पर किया गया है तथा यह अध्ययन पृथक–पृथक अन्य संकाय के इसी स्तर के विद्यार्थियों व शिक्षकों पर किया जा सकता है।
17. यह अध्ययन केवल बी.एड महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राएं पर केवल व्यवसाय के प्रतिबद्धता, सावेंगिक बुद्धि का अनुभव व समझ का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है तथा यह अध्ययन विद्यालय स्तर पर प्राशासनिक व्यवस्थाओं में कार्यरत कर्मचारियों की अधिकारों से सम्बन्धित विचारों एवं समझ के प्रति तुलनात्मक अध्ययन के रूप में भी किया जा सकता है।
18. यह अध्ययन केवल बी.एड. महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत समेकित रूप से हिन्दी माध्यम व अग्रेंजी माध्यम के छात्रों पर किया गया है तथा यह अध्ययन अन्य स्तर के विद्यालयों में व विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् एवं अध्यापनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के समेकित के अलावा शिक्षक व छात्रों पर ही किया जा सकता है।

संदर्भ

1. श्रीवास्तव डी.एन (2009), अनुसंधान विधियां, आगरा साहित्य प्रकाशन, आगरा ।
2. प्रसाद लोकेश के. (2010),अनुसंधान पद्धति शास्त्र ,कोठारी बुक्स, नई दिल्ली ।
3. डॉ विपिन अस्थाना (2011), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी,विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली ।
4. शर्मा,आर.के.(2011),शिक्षा तथा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, साहित्य प्रकाशन, आगरा ।
5. अस्थाना विपिन (2015), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी अग्रवाल पब्लिकेशन।
6. वर्मा जी एस (2012), शिक्षक एवं शिक्षक तकनीकी, रॉयल बुक डिपो।

7. जी एन शर्मा 2020), अध्यापक शिक्षा, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
8. एन.सी. एफ. (2005), नई दिल्ली, शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।
9. अंजलि युलु (1977) शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि तथा शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन, आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय।
10. अमरीक सिंह (1990), ऑन बीइंग अ टीचर, नई दिल्ली कोणार्क।
11. एंडरसन लॉरेंस (2012), इन्क्रिसिंग टीचर इफेक्टिवनेस, सस एडिशन, पेरिस, यूनेस्को